'जंगल के जुगनू' उपन्यास में नारी विमर्श

*** रघुनाथ विट्ठल मोरे**
शोधार्थी
हिंदी अनुसंधान केंद्र,
म.स.गा. महाविद्यालय, मालेगाव कॅम्प,
मालेगाव, जिल्हा नाशिक.
मोबाईल : 9767141475
ई–मेल : rvmore89@gmail.com

**** प्रो. डॉ अनीता नेरे**
शोध निर्देशक
हिंदी अनुसंधान केंद्र,
म.स.गा. महाविद्यालय, मालेगाव कॅम्प
मालेगाव, जिल्हा नाशिक
मोबाईल : 9404556342
ई–मेल : anitanere321@gmail.com

शोधसार:–

'जंगल के जुगनू' उपन्यास के रचनाकार देवेश ठाकुर एक लोकप्रिय उपन्यासकार हैं उन्होंने हमेशा ऐसे विषयों पर लेखन कार्य किया है जिससे समाज में एक नई चेतना और ऊर्जा का संचार होता है, आज मैंने 'जंगल के जुगनू' उपन्यास में नारी विमर्श पर आधारित शोध निबंध प्रस्तुत करने चेष्टा की है । शोध निबंध में समाज सेवा से प्रेरित डॉ. देवांगी तथा डॉ. पलक शिव शंकरन नामक दो महिलाओं की कहानी प्रस्तुत की है । यह दोनों महिलाएं अपने जीवन संघर्ष के बावजूद समाज में प्रकाश फैलाने का काम करती है । और अपने आप को सिर्फ 'जंगल के जुगनू' की भाती समझती हैं, उनका बड़प्पन प्रस्तुत शोध निबंध में दिखाई देगा ।

प्रस्तावना:–

डॉ. देवांगी गांधी कॉलेज में लिट्रेचर,तो डॉ. फलक शिवशंकरण सेकसरिया कॉलेज में केमिस्ट्री की प्रोफेसर हैं । दोनों ही अपने व्यक्तिगत जीवन में अपेक्षित तथा टूटी हुई हैं । अपने से ज्यादा दुखियों के दुखों को काम करने की कोशिश करते हुए वह समाज सेवा में जुड़ जाती हैं । डॉ. देवांगी ने 'सहयोग' नामक एक संस्था की स्थापना की है, जिसके माध्यम से वह कांदिवली के पास होने वाली गांधीनगर की झोपड़पटीयों में रहने वाले गरीब महिलाओं की पीड़ाओं को दूर करने के लिए एक संगठन बनती है । कितनी ही विधवा तथा परित्यक्ता स्त्रियों को वह आसपास की बिल्डिंगों में घरेलू काम दिलवाती है । देवांगी जी की प्रेरणा से दो

डॉक्टर बारी–बारी से बस्ती में आती हैं और इन महिलाओं की छोटी–छोटी बीमारियों का इलाज करते हुए उन्हें मुक्त में दवाइयां बांटती हैं तथा गंभीर मरीजों का कारपोरेशन के अस्पतालों में दाखिल करवाती हैं । कलेक्टर संस्था के नाम जमीन लेकर वह गांधीनगर में लड़कियों के लिए एक स्कूल खोलने में प्रयत्नशील रहती है ।

डॉ. पलक शिवशंकरण भी देवांगी जी से प्रभावित होकर समाज सेवा की और अपना कदम बढ़ाती है । वह अपनी बड़ी बहन को अपना गॉडफादर मानते हुए वह बड़ी लगन से उनसे जुड़ी रहती है तथा अपनी ओर से दुखियों की सेवा में लगी रहती है । देवांगी जी के साथ रहकर वह अपनी कमजोरियों को कम करती है साथी समाज की ओर देखने का नया दृष्टिकोण पाती है । देवांगी की बीमारी तथा अंतिम दिनों में वह हमेशा उनके साथ खड़ी रहती है । उनकी मृत्यु के बाद सहयोग की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाती है तथा देवांगी के अधूरे सपने को पूरा करने में हर समय प्रयास करती है । संख्या के लिए आर्थिक मदद के लिए वह कितने ही लोगों के पास जाकर उन्हें अपनी योजना बताकर उनसे सहयोग प्राप्त करती है । इस बीच उन्हें अनेक अच्छे बुरे अनुभव से गुजरना पड़ता है । फिर भी वह अपना हौसला बुलंद रखती है, और पूरी लगन से अपने आप को समाज सेवा में जुट जाती है । वह कॉलेज में पढ़ने वाली कई लड़कियों की भी मदद लेती है ।

मुख्य शब्द

समाज सेवा, गांधीनगर, संगठन, सहयोग, अपेक्षित, परित्यक्ता, विधवा, कॉरपोरेशन, ननिहाल.

परिकल्पना:–

1. महानगरीय विमर्श और नारी विमर्श एक साथ समाज के सामने लाना।
2. पूर्ण शिक्षित नारी की समस्या ।
3. समाज सेवा में आत्मीय संतोष की खोज ।

संशोधन पद्धति :–

शोध निबंध में उपन्यास पढ़कर इसका विवेचन समीक्षात्मक शोध पद्धति से किया गया है । उपन्यास में बड़े बाप की बिगड़ी औलाद और उसके परिणाम दिखाई देते हैं । यह उपन्यास पूर्व दीप्ति तथा डायरी शैली में लिखा गया है ।

डॉ. पलक शिवशंकरन् :

कथानायिका डॉ. पलक शिवशंकरनू सेक्सरिया कॉलेज में कैमिस्ट्री विभाग की हेड के रूप में कार्यरत हैं । पिछले ३६ सालों से वह पढ़ाने का काम कर रही है । जीवन की ५८ वर्ष की इस यात्रा में उन्हें कितने ही अभाव, कितने ही अपमान, उपेक्षाएं तथा अकेलेपन को सहन करना पड़ा था । इसी बीच वह डॉ. देवांगी के संपर्क में आती हैं और 'सहयोग' संस्था के माध्यम से गांधीनगर की झोपडपट्टियों में रहने वाले गरीब लोगों की सहायता करने में जुट जाती है । 'सहयोग' संस्था ने मानो उनके एकाकी जीवन में सद्भावना का एक हाथ आगे बढाया था, जिससे उनके जीवन का अंधेरा थोडा–सा नष्ट होकर उसमें उजाला फैल गया था । ऐसे में जब उन्हें संकल्प प्रतिष्ठान, कोल्हापुर की ओर से उनके सामाजिक कार्यों के लिए 'महाराष्ट्र मनीषा' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, तब उन्हें लगता है कि उनका जीवन सार्थक हो गया ।

डॉ. पलक का ननिहाल तिरची में था । इसी छोटे–से शांत कस्बे में यह अपनी छोटी बहन सब्बू के साथ बड़ी हो गयी थीं। उसकी मां बरसों पहले अपने मामा के पास मुंबई आ गई थी । मामा ने ही म्युनिसिपैलिटी के एक स्कूल में उसे नौकरी दिलायी थी । पिताजी अप्पा तो पहले से ही मुंबई में रहते थे । वे एक मिल में मैकेनिक थे । मामा की कोशिशों से ही मां की शादी अप्पा से हो गई थी । लेकिन उनका वैवाहिक जीवन बिल्कुल अच्छा नहीं रहा। मां के घमंडी स्वभाव के कारण अप्पा को बार–बार अपमानित होना पडता था । उसे अपने भाइयों पर बडा गर्व था क्योंकि वे अच्छी पोस्ट पर नौकरियाँ कर रहे थे । माँ पिताजी से

ज्यादा कमाती थी । इस कारण वह उन्हें बार–बार ताने मारती रहती थी । मां ने उनके जीवन को मानो नरक बना दिया था । केवल कहने के लिए ही वे जिंदा हैं । शादी के बाद पहले दिन से ही उनमें संघर्ष हो रहा था । दोनों की सोच कभी भी एक–दूसरे से नहीं मिल सकी। मिल की नौकरी छूटने पर पिताजी को अक्सर मां की गालियां सुननी पड़ती थी । लेकिन फिर भी पिताजी सब कुछ सहन कर लेते थे । अपने से जितना बनता था, उतना वे कर देते थे । मिल से कर्जा उठाकर उन्होंने बब्बो की शादी करा दी थी । अनेक ओगों हाथ–पैर पकड़कर उन्होंने ही बब्बो को मद्रास कारपोरेशन के स्कूल में नौकरी दिलायी थी । मां की बातों से तंग आकर वे मद्रास जाकर बब्बो के पास रहने लगते हैं ।

बडी बहन बब्बो की शादी उसके छोटे मामा के साथ मद्रास में हो गई थी । शादी के समय वह केवल पंद्रह–सोलह साल की थी । इस शादी के बाद ही मां पलक तथा सब्बू को अपने पास मुंबई बुलाती है । तब पलक ने आठवीं, तो सब्बू ने पांचवी पास कर ली थी । तिरची के एक छोटे से मुहल्ले से उठकर दोनों बहनें मुंबई के विस्तार में पूरी तरह से खो जाती हैं । अंधेरी की चाल के एक अंधेरे कमरे में पलक बडी घुटन का अनुभव करती थी । उसे बार–बार तिरची का खुलापन, अपने साथी तथा मौसी की याद आ जाती । मां और मौसी–दोनों के स्वभाव एकदम भिन्न थे । कॉरपोरेशन के स्कूल में टीचर होने के कारण मां घर में भी स्कूल जैसा अनुशासन चाहती थी । हर बात में वह टोकती रहती थी और हमेशा आदेश देती थी । लेकिन मौसी कभी भी बच्चों को नहीं डाँटती थी । विधवा और निःसंतान होने पर भी बहन के बच्चों से बहुत प्रेम करती थी । फिर भी, एम. एसस्सी की पढाई पूरी होने तक पलक अपनी मां के साथ वहीं पर रहती है ।

डॉ. पलक शुभम् के साथ विवाह बंधन में बंधती है लेकिन केवल पांच वर्ष के अल्पसमय में ही उनका वैवाहिक जीवन पूरी तरह से टूटकर बिखर जाता है । सरदर्द से परेशान होकर शुभम् ऑफिस से जल्दी घर लौटता है और सरदर्द से छुटकारा पाने के लिए एक एग्रीन की गोली खाकर सो जाता है । लेकिन वह बाद में जाग ही नहीं पाता है, हमेशा के लिए सो जाता है । शुभम् की अचानक हुई इस मृत्यु से पलक का पूरा जीवन ध्वस्त हो जाता है । अभी–अभी उसने अपनी जिंदगी की शुरुआत की थी, तभी सब कुछ उलट–पुलट हो गया था । बेटा श्रीराम तब मुश्किल से तीन साल का रहा होगा । पलक के पेट में राज्यश्री पल रही थी । इतनी बडी दुनिया में वह अकेली पड गयी । कहने के लिए माँ–बाप तथा बहनें थीं, परंतु सभी अपने–अपने कामों में उलझे हुए थे । शादी के बाद पलक अपने पति के साथ किराए के फ्लैट में रहने लगी थी । फ्लैट का मालिक उसके अकेलेपन का फायदा उठाने का भी प्रयास करता था । ठीक इसी समय देवांगी दीदी ने पलक के जीवन में प्रवेश किया और उसे समाजसेवा की ओर मोड दिया।

पलक ने शादी से पहले ही अपनी पीएच. डी. पूरी की थी । उसके पिताजी अप्पा बब्बो के पास मद्रास चले गए थे । अब अंधेरी की चाल के कमरे में सब्बू मां के साथ रहती थी । मां की नौकरी का अंतिम साथ चल रहा था । तभी कॉरपोरेशन ने अपने स्टाफ के लिए घाटकोपर में एक कालोनी बनवाई। शुभम् ने मां से भी ॲप्लिकेशन भरवा दिया था । संयोग से लॉटरी में मां का नंबर निकल आता है । लेकिन इसके लिए कॉरपोरेशन को चालीस हजार रूपये पहले देने थे । मां दस हजार से ज्यादा देने के लिए तैयार नहीं थी । शुभम् ने अपने ऑफिस से किसी तरह तीस हजार का इंतजाम किया और मां के नाम पर फ्लैट ले लिया। दुर्भाग्य से फ्लैट का कब्जा मिलने से पहले ही शुभम् इस दुनिया को छोड़कर चला जाता है । पलक ने सोचा था कि उसकी मां तथा मौसी उनके साथ इस नये फ्लैट में रहेंगी। वे दोनों उनके बच्चों की देखभाल भी कर लेंगी परंतु उसका सारी प्लानिंग चौपट हो जाती है । फ्लैट तैयार होने के बाद मां, मौसी और सब्बू नये फ्लैट में रहने लगती हैं । पलक भी उसी फ्लैट में शिफ्ट होती है । यहीं पर उसकी दूसरी बेटी राज्यश्री का जन्म होता है ।

वास्तव में फ़्लैट की लगभग सारी रकम खुद पलक ने ही भरी थी, केवल दस हजार उसकी मां के थे । परंतु मां के नाम पर फ़्लैट होने के कारण वह लोगों को बताती थी कि यह मेरा ही फ़्लैट है । बेचारी पलक को मैं यहां अपने पास लेकर आयी हूँ। यह सुनकर पलक को बडा दु:ख होता था । वह यह भी बताती थी कि इस फ़्लैट का नॉमिनेशन भी मैंने पलक के ही नाम कर दिया है । लेकिन बाद में नॉमिनेशन में पलक के नाम के साथ अन्य दानों बहनों का नाम भी डाल दिया जाता है । बास्तव में दोनों बहनों का इस फ़्लैट से कोई संबंध नहीं था । मां की मृत्यु के बाद दोनों बहनों को समझाकर पलक फ़्लैट को अपने नाम करवा देती है । पलक अपने माता–पिता से असीम प्रेम करती है । इसी कारण ही तीनों बहनें मिलकर अपनी अम्मा–अप्पा की शादी की पचासवीं सालगिरह शादी की गोल्डन जुबली मनाती हैं ।

पलक ने ही स्वयं पैसों का जुगाड करते हुए अपनी छोटी बहन सब्बू की शादी करा दी थी । उसका पति राजन फोटोग्राफर था । शादी के बाद सब्बू अपने पति राजन के साथ एन–टॉप हिल के फ़्लैट पर अपने ससुराल चली जाती है । वास्तव में सब्बू मां की बड़ी लड़की थी । मीठी–मीठी बातें बनाकर वह मां से अपना काम निकालती थी । शादी के समय वह मां को पटाती है और उससे कुछ भारी गहने प्राप्त करती है । तीनों बहनों में वह बड़ी चालाक और केलकुलेटिव थी । शादी के बाद भी वह मां–पिताजी से अच्छे संबंध बनाए रखती है, ताकि समय आने पर वे उसकी मदद कर सकें। अपने नये फ़्लैट के लिए वह मां से एक लाख से भी ज्यादा रूपये प्राप्त कर लेती है । पहला बच्चा होने पर वह पिताजी को मद्रास से अपने पास बुला लेती है और उन्हें घर तथा बच्चे की रखवाली की जिम्मेदारी सौंपती है ।

डॉ. पलक एक ओर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाती हैं, तो दूसरी ओर समाजसेवा में लगी रहती हैं । देवांगी से उसने समाज की ओर देखने का एक नया दृष्टिकोण प्राप्त किया था । देवांगीजी से प्रभावित होकर ही वह समाजसेवा की ओर अग्रसर हुई थीं। उन्हें अपनी बडी बहन मानते हुए पलक बड़ी लगन से उनसे जुडी रहती तथा अपनी ओर से दुखियों की सेवा में लगी रहती। देवांगी के निकट संपर्क से वह अपनी कमजोरियों को कम करती है । देवांगी की बीमारी तथा उनके अंतिम दिनों में वह हमेशा उनके साथ रहती है तथा उनकी हर संभव मदद करती है । उनकी मृत्यु के बाद वह 'सहयोग' की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाती है तथा देवांगी के अधूरे सपने को पूरा करने में प्रयत्नशील रहती है । संस्था के लिए आर्थिक मदद मांगने के लिए वह कितने ही लोगों के पास पहुंचती है तथा अपनी योजना बताकर उनसे आर्थिक सहयोग प्राप्त कर लेती है । इसी बीच उन्हें अनेक अच्छे–बुरे अनुभवों से गुजरना पड़ता है । फिर भी वह हिम्मत नहीं हारती है और पूरी लगन से समाज की सेवा में जुट जाती है । इसके लिए वह कॉलेज में पढने वाली कई लड़कियों की भी मदद लेती है । उसके इस समाजकार्य के लिए उसे संकल्प प्रतिष्ठान, कोल्हापुर इस संस्था के द्वारा 'महाराष्ट्र मनीषा' पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है ।

2. डॉ. देवांगी :

डॉ. देवांगी शहर के उच्च वर्गीय व्यवसायी की इकलौती बेटी है । घर में नौकर–चाकर थे, पढाई तथा नृत्य के लिए घर में टीचर आते थे । किसी भी बात की कोई कमी नहीं थी । केवल एक मां की कमी थी, जो देवांगी को जन्म देकर साल भर बाद चल बसी थी । बहुत मन्नत के बाद पैदा होने के कारण ही उसे देवांगी नाम दिया गया था । बेटी के पालन–पोषण की चिंता के कारण पिताजी ने दूसरी शादी नहीं की थी । देवांगी की कॉलेज की जिंदगी भी बहुत मजे में कटी थी । एम. ए. की पढाई तक अक्सर वह पहला अथवा दूसरा स्थान पाती थी । कभी–कभी सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेती थी । अपनी सहेलियों के बीच वह बहुत लोकप्रिय थी । बी. ए. के फाइनल इयर की पढाई के दौरान कॉलेज के वार्षिक समारोह में उसने हनुमंत नायडु की एक गजल गाई थी, जिसे सुनकर कॉलेज के ट्रस्टी सूरजभान बाफना बडे प्रभावित होते हैं और अपने इकलौते बेटे अशोक के लिए उसका हाथ मांगते हैं । सूरजभान जी कई मिलों के मालिक थे । उनके कई व्यवसाय थे । उनका बेटा अशोक उसी साल अमेरिका

से बिजनेस मैनेजमेंट की डिग्री लेकर लौटा था । देवांगी को देखते ही वह भी उस पर मोहित हो जाता है । लेकिन देवांगी एम. ए. पूरा होने से पहले शादी के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी । उसके पापा भी इतने अमीर घराने में बेटी की शादी नहीं करना चाहते थे । लेकिन पिता–पुत्र की जिद के कारण पिताजी कुछ भी नहीं कर पाते हैं और शादी के लिए तैयार हो जाते हैं । वे सोचते हैं कि अशोक भी उसके पिताजी के समान ही शालीन और सद्विचारों वाला होगा । धीरे–धीरे देवांगी भी अशोक को पसंद करने लगती है और कुछ ही दिनों में दोनों की शादी करा दी जाती है ।

लेकिन शादी के बाद उनका मोह–भंग हो जाता है । अशोक की असलियत धीरे–धीरे सामने आने लगती है । वह बाहर से जितना शालीन और सभ्य लगता था, भीतर से उतना ही कठोर और कामुक था । वह केवल देवांगी के शरीर से प्रेम करता था । मानो एक खिलौना, जिससे वह जब चाहे खेल सकता था । बाद में पता चलता है कि दूसरी औरतों के साथ भी उसके संबंध थे । रोज़ नामक एक अमेरिकन लडकी से उसने शादी की थी और बाद में डाइवोर्स भी ले लिया था । रोज़ ने एक बच्चे को भी जन्म दे दिया था । इन सारी बातों से देवांगी बहुत ही डिस्टर्ब रहने लगती है । सूरजभानजी सोचते थे कि देवांगी जैसी सुसंस्कारी लडकी से शादी होने के बाद अशोक सुधर जाएगा, परंतु ऐसा नहीं हो सका। इससे वे बडे दुखी होते हैं । उन्हें लगता है कि उनके कारण ही देवांगी जैसी लडकी पर कितना बडा अन्याय हुआ है । अंत में हार कर उन्होंने अशोक को अपनी संपत्ति से बेदखल कर दिया और सारी संपत्ति देवांगी के नाम करा दी देवांगी को वे समझाते हैं कि मैंने एक बेटा खो दिया है, लेकिन बदले में एक सुशील बेटी को प्राप्त कर लिया है । सूरजभानजी की प्रेरणा से ही देवांगी 'सहयोग' नाम की संस्था स्थापित करती है और दुखियों की सेवा में अपना मन लगाती है ।

अशोक को तो घर से निकाल दिया गया, लेकिन उसका बेटा देवांगी के पेट में पल रहा था । सूरजभान देवांगी को सलाह देते हैं कि वह इस गर्भ को गिरा दे। क्योंकि भविष्य में उनकी मृत्यु के बाद अशोक फिर वापस लौटेगा और अपनी संतान के बहाने देवांगी को तंग करेगा। अपने बदमाश बेटे की कोई भी निशानी वे अपने घर में रखना नहीं चाहते थे । लेकिन देवांगी इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं होती है । बाबूजी की मर्जी के खिलाफ बह सुहास नामक बेटे को जन्म दे देती है । सूरजभानजी का गुस्सा अब भी ठंडा नहीं हुआ था । वे देवांगी को बताते हैं कि अशोक के बेटे को वह कभी भी उनके सामने न ले आये। क्योंकि उस बच्चे में उन्हें अशोक का ही चेहरा दिखाई देता है । लेकिन अपने अंतिम दिनों में बाबूजी सुहास को बड़े प्रेम से अपने पास सुलाते है और खुद हमेशा के लिए सो जाते हैं । इसी बीच डॉ. देवांगी की डॉ. बिज्ञीय घोष से मुलाकात हो जाती है । छोटे गुहास की बीमारी का इलाज करने के लिए यह डॉ. घोष के क्लिनिक में चली जाती थी । बातों–बातों में उन्हें पता चलता है कि डॉ. देवांगी शहर के विख्यात व्यवसायी सूरजभान की पुत्र–वधू है । स्वयं ही घोष ने 'सूरजभान चारिटेबल ट्रस्ट' द्वारा दी गई आर्थिक सहायता से ही अपनी डॉक्टरी की पढाई पूरी की थी । अतः सूरजभान जी के प्रति उनके मन में बड़ी सम्मान की भावना थी । वे देवांगी को बताते हैं कि अब सुहास को दिखाने के लिए तुम्हें क्लिनिक में आने की कोई जरूरत नहीं है । वे खुद देवांगी के बंगले पर आकर सुहास की बीमारी का इलाज करेंगे । तब से देवांगी के बंगले पर उनका आना–जाना शुरू हो जाता है । सुहास की जाँच–परख के बाद वे देर तक बाबूजी के पास बैठकर इधर–उधर की बातें करते रहते ।

धीरे–धीरे दोनों एक–दूसरे के निकट आने लगे । दोनों साथ–साथ बाहर भी जाने लगे । कभी थियेटर में तो कभी सेमिनार में ये दोनों साथ चले जाते । डॉ घोष की निकटता देवांगी को भी अच्छी लगने लगी थी । कभी–कभी देवांगी को लगता कि क्या उसका यह आचरण ठीक है? बाद में उसे लगता कि उसकी जिंदगी उसकी अपनी जिंदगी है । उसे वह चाहे जैसे जी सकती है । सुहास तथा बाबूजी उसके जीवन के अकेलेपन को नहीं भर सकते हैं । डॉ. घोष अगर उसके अकेलेपन को कम कर सकते हैं, तो उनके साथ संबंध रखने में क्या बुराई है? लेकिन एक दिन डॉ. घोष देवांगी को बताते हैं कि उसका पति अशोक उन्हें

बार–बार धमकी भरे पत्र लिखता है । देवांगी के साथ उनका घूमना–फिरना उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है । यह सुनकर देवांगी सोचती है कि अशोक कुछ भी कर सकता है । उसके कारण डॉ. धोष की जान को खतरा भी हो सकता है । और यह वह कभी भी सहन नहीं कर सकती है । इसके बाद दोनों का मिलना–जुलना लगभग बंद हो जाता है ।

डॉ. देवांगी फिर से अकेली पड़ जाती है । वह अक्सर बीमार पड़ने लगती है । टाटा हॉस्पिटल में जब वह अपनी जाँच करवाती है, तब पता चलता है कि उसे ब्लड कैंसर है । अब यर्ड स्टेज चल रही है । डॉक्टर ने उसे अस्पताल में दाखिल होने की सलाह दी थी । परंतु देवांगी अपने घर पर ही शांति से मरना चाहती है । इस कारण अस्पताल जाने से मना कर देती है । वह अपनी 'सहयोग' संस्था की सारी फाईले डॉ. पलक को सौंप देती है और खुद मृत्यु को गले लगाती है । मृत्यु के समय उसके चेहरे पर शांति की एक अपूर्व आभा थी । उसके अंतिम दर्शन के लिए बंगले के सामने गांधीनगर के हजारों झोपडपट्टिवाले इकट्ठा होकर 'देवांगी दी अमर रहे' के नारे लगा रहे थे । सचमुब, देवांगीजी ने अपना जीवन केवल जीया नहीं था, तो उसे रचा था । जिंदगी तो सभी जीते हैं, लेकिन उसे रचता कोई बिरला ही है । जीवन को रचा जाना ही उसे सार्थक बनाता है । अपने जीवन को सार्थक बनाकर वह हमेशा के लिए चली गई थी । लेकिन जाने से पहले उसने अपनी कितनी ही छात्राओं में समाज सेवा की ज्योत जलाई थी । डॉ. पलक भी देवांगी जी से प्रभावित होकर समाज सेवा की ओर अग्रसर हुई थीं । पलक को अपनी छोटी बहन मानकर देवांगी जी उसमें होने वाली कमजोरियों को कम करती है तथा उसे समाज की ओर देखने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है । अपने अंतिम दिनों में वह 'सहयोग' संस्था की पूरी जिम्मेदारी पलक को सौंपती है और इस दुनिया से हमेशा के लिए विदा लेती है ।

निष्कर्ष

आज समाज में ऐसी विपरीत अवस्था है कुछ चंद समाज सुधारक भला क्या कर सकते हैं, ऐसा प्रश्न चिन्ह समाज के सामने खड़ा है भले ही वे समाज की सेवा के लिए अपना तन, मन और धन सब कुछ अर्पित कर देते हैं, फिर भी उनकी अपनी मर्यादा है । देश के सारे गरीबों तक तो वह नहीं पहुंच सकते। वह गरीबों के जीवन में उजाला फैलाना चाहते हैं, परंतु वे तो केवल एक टिम टिम करने वाले जुगनू है ।

संदर्भ

जंगल के जुगनू उपन्यास : देवेश ठाकुर